

जब से मैंने  
झगड़ा करना  
टाला...



**हलो फ्रेन्ड्स, मेरा नाम है रोनी,  
आज में आपसे कहनेवाला हूँ मेरी स्टोरी**



मैं पहले ऐसा था जो हमेशा सबसे झगड़ता,  
और कोई डाँटे तो खुद का बचाव करता।



छोटी-छोटी बातों में मैं मम्मी से दलीलें करता,  
छोटी-छोटी बातों के लिए भाई को मार भी देता,



लोग भी कहते, "हम तुझ से परेशान हो गए हैं"  
लेकिन फ्रेंड्स, यह सबकुछ तो अब भूतकाल बन गया।



**आपको पता है? मुझ में यह परिवर्तन कौन लाया?  
और किस ने मुझे मेरी बुरी आदतों से छुड़वाया?**

मुझे दादाजी मिले, जिन्होंने मेरा हाथ पकड़ा,  
और बहुत प्रेम से उन्होंने मुझे समझाया





राह पर चलते हुए यदि तेरे सामने दीवार आए,  
तो तू उससे टकराएगा या पास से निकल जाएगा?



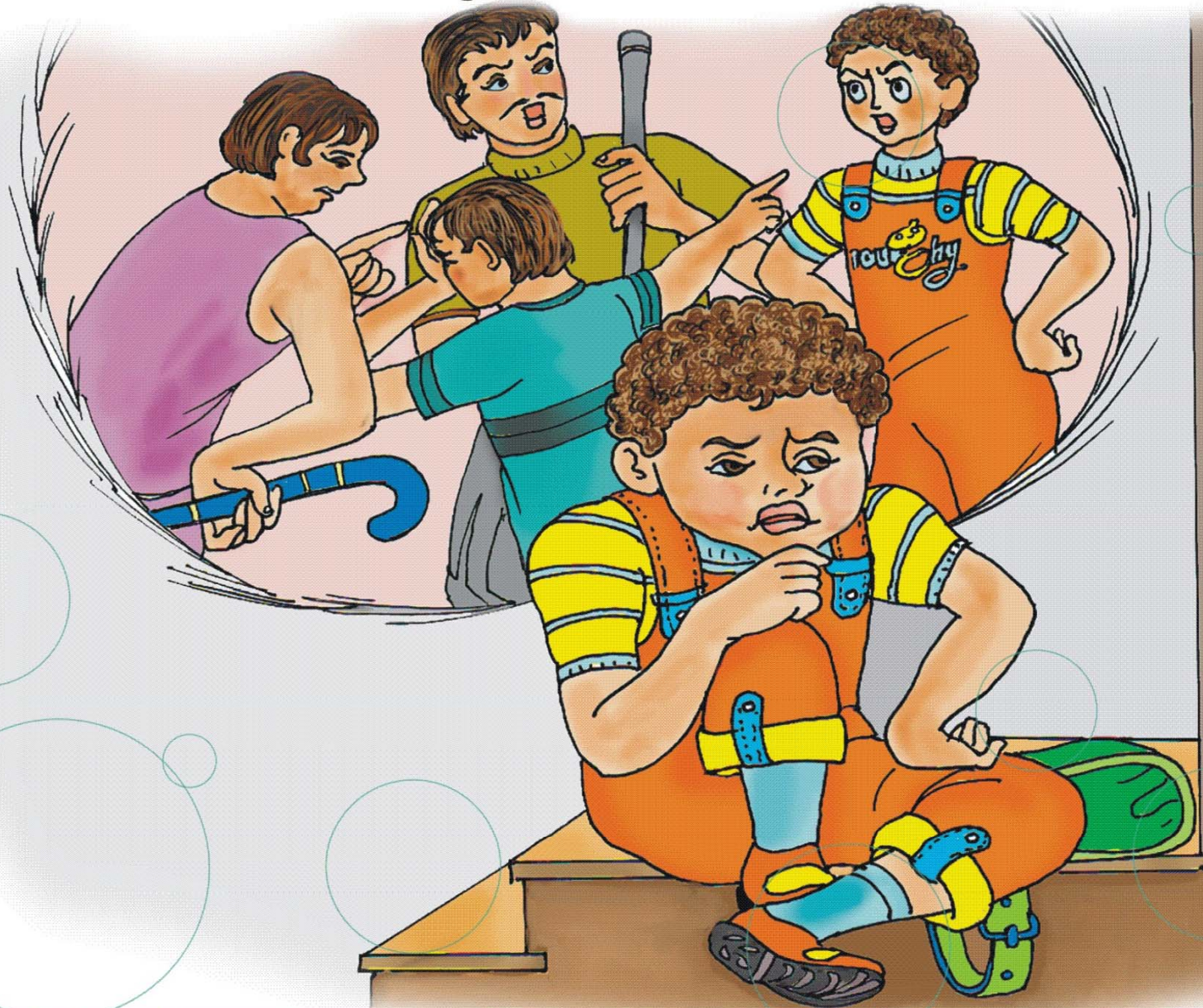
कुछ भी हो, मैं उससे टकराऊँगा ही नहीं न!  
यदि मैं उससे टकराऊँगा तो मुझे ही लगनेवाला है न!"



**"बेटे, इंसान भी ठीक उसी तरह दीवार जैसे ही है।  
यदि तू उनसे टकराएगा तो तू मूर्ख है...."**

**क्यों कि जीवित व्यक्ति बदला लेंगी,  
उन्हें दुःख देगा तो उसकी सजा मिलेगी...."**

इगड़ा करते समय जब हम सामनेवाले को दुःख देते हैं,  
तब बदले में हम भी दुःखी होते ही है....



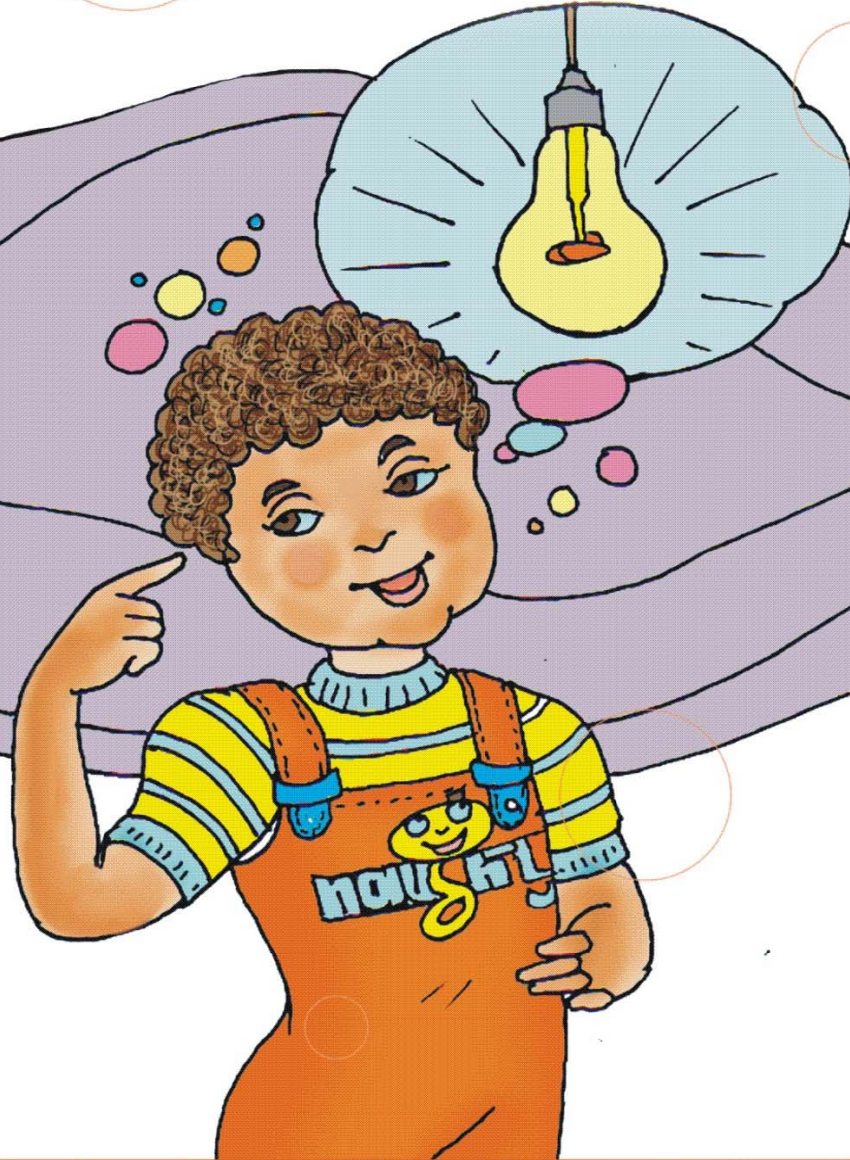
टकराव टालना मतलब सहन करना, ऐसा नहीं  
लेकिन हर कहीं पर एडजस्टमेन्ट लेना, ऐसा है....



ए डस्टमेन्ट लेने से तेरी कोमनसेन्स बढ़ेगी,  
और बहुत सारे अच्छे फ्रेन्ड्स भी मिलेंगे।



तब से मैंने तय किया कि किसी को दुःख नहीं दूँगा,  
ताकि झगड़ा करने की बजाय उसका हल खोज निकालूँ।

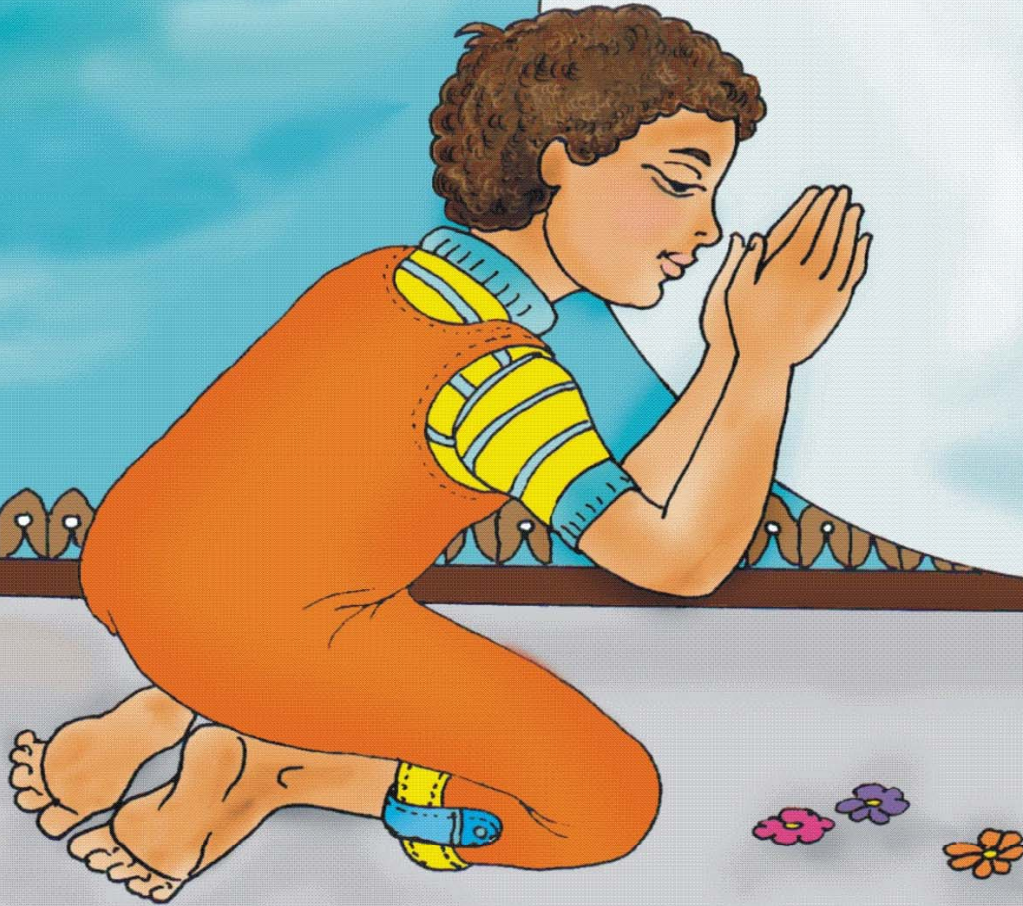


एडजस्टमेन्ट लेने से मेरी सूझ बहुत ही खिलने लगी,  
आनंद में रहने से शक्तियाँ भी बहुत बढ़ने लगी।





इसके बावजूद भी यदि कभी झगड़ा हो जाए,  
तो तुरंत भगवान को याद करके प्रतिक्रमण कर लो।



**प्रतिक्रमण** अर्थात् हृदय से सोरी कह देना।  
और यों सभी भूलों से मुक्त हो जाना।

**"टकराव टालो"** चाबी से मेरा जीवन स्वर्ग बन गया।  
इसके लिए दादाजी को लाखों प्रणाम - और क्या कहूँ...



बुक- ३

‘कार’टून कहानियाँ

